पुना International School

Shree Swaminarayan Gurukul, Zundal

Claas-VIII

Hindi

Specimen copy

Year- 2020-21

Semester- 2

December

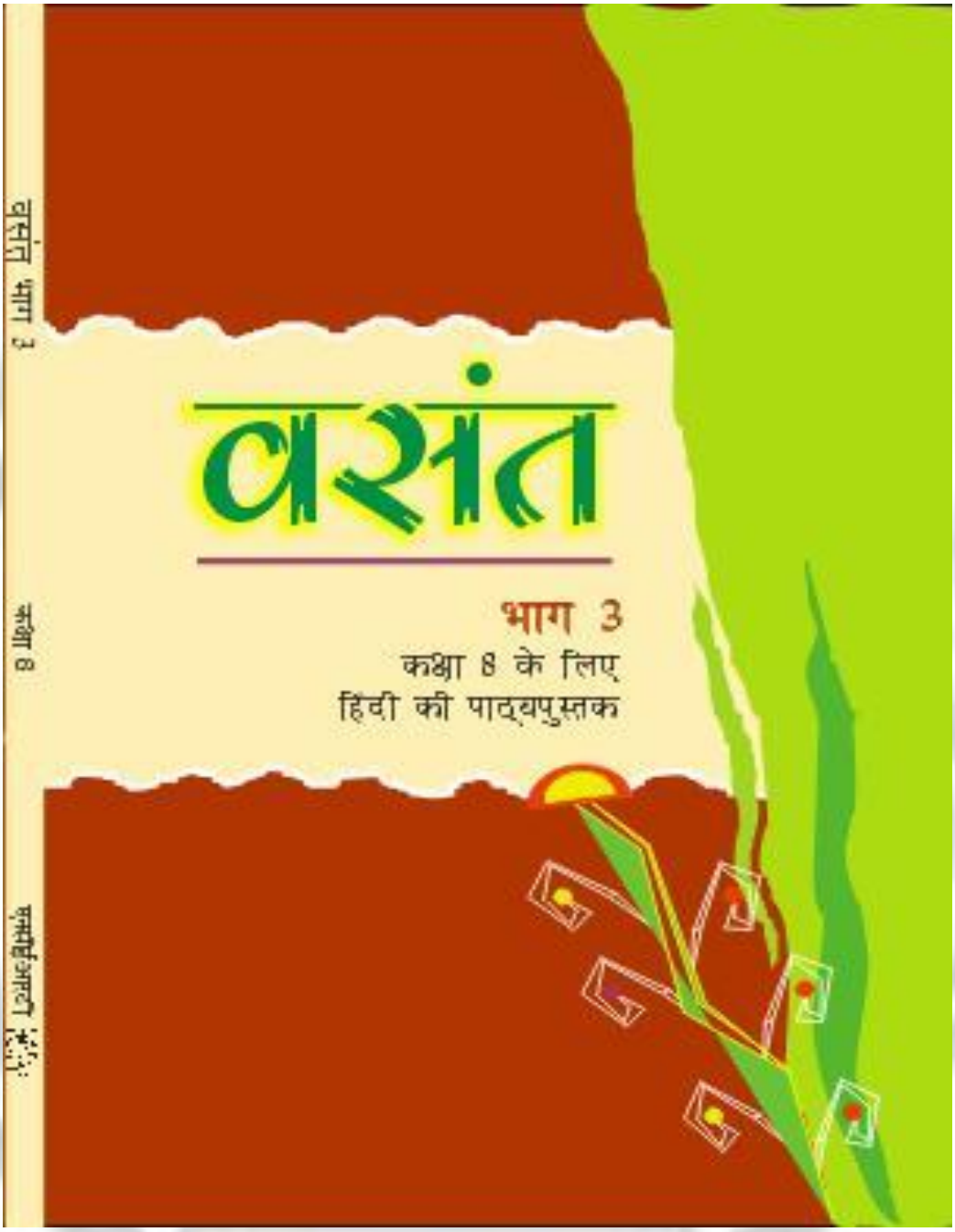
वसंत भाग 3
वसंत
भाग 3
कक्षा 8 के लिए
हिंदी की पाठ्यपुस्तक
कक्षा 8

भारत की खोज
पाठ 6 अंतिम दौर -एक

1 राजा राममोहन राय किसके प्रवर्तक थे?
उ पत्रकारिता के
2 पहला अखबार कब और कौन - सी भाषा में लिखा गया?
उ 1818 अंग्रेजी में
3 भारतीय सेना ने कब बगावत की?
उ 1857 में
4 विवेकानंद ने किस मिशन की स्थापना की?
उ रामकृष्ण मिशन
5 बीसवी शताब्दी में कौन से दो व्यक्तित्व सामने आए?
उ गांधीजी और टैगोर ।
6 नए पूँजीवाद का भारत के किस ढ़ाँचे पर प्रभाव पड़ा?
उ-नए पूँजीवाद का भारत के आर्थिक ढ़ाँचे पर प्रभाव पड़ा।
7 अंग्रेजी शासन की धुरी किसे कहा जाता था?
उ- कलेक्टर या ज़िला मजिस्ट्रेट को शासन की धुरी कहा जाता था।
8 राजा राममोहन राय की पत्रकारिता का संबंध किससे था?
उ- राजा राममोहन राय की पत्रकारिता का संबंध मनुष्य के विचारों को जागरुक करने का था।
9 राजा राममोहन राय ने किसकी स्थापना की?
उ- राजा राममोहन राय ने " ब्रहम-समाज " की स्थापना की।
10 आर्य समाज का नारा क्या था?
उ- आर्य समाज का नारा " वेदों की ओर लौटो " था।
11 सर सैयद अहमद खाँ कौन थे?
उ- सर सैयद अहमद खाँ एक ऐसे नेता थे,जो यह सोचते थे कि ब्रिटिश सत्ता के सहयोग से वे मुसलमानों की स्थिति को सुधार सकते थे।

व्याकरण

-समास

समास 'संक्षिप्तिकरण' को समास कहते हैं। दूसरे शब्दों में समास संक्षेप करने की एक प्रक्रिया है। दो या दो से अधिक शब्दों का परस्पर सम्बन्ध बताने वाले शब्दों अथवा कारक चिह्नों का लोप होने पर उन दो अथवा दो से अधिक शब्दों के मेल से बने एक स्वतन्त्र शब्द को समास कहते हैं। उदाहरण 'दया का सागर' का सामासिक शब्द बनता है 'दयासागर'।

समासों के परम्परागत छ: भेद हैं-

1. द्वन्द्व समास
2. द्विगु समास
3. तत्पुरुष समास
4. कर्मधारय समास
5. अव्ययीभाव समास
6. बहुव्रीहि समास

1. द्वन्द्व समास

जिस समास में पूर्वपद और उत्तरपद दोनों ही प्रधान हों अर्थात् अर्थ की दृष्टि से दोनों का स्वतन्त्र अस्तित्व हो और उनके मध्य संयोजक शब्द का लोप हो तो द्वन्द्व समास कहलाता है; जैसे

- माता-पिता = माता और पिता
- राम-कृष्ण = राम और कृष्ण
- भाई-बहन = भाई और बहन
- पाप-पुण्य = पाप और पुण्य
- सुख-दुःख = सुख और दुःख

2. द्विगु समास

जिस समास में पूर्वपद संख्यावाचक हो, द्विगु समास कहलाता है।
जैसे-

- नवरत्न = नौ रत्नों का समूह
- सप्तदीप = सात दीपों का समूह
- त्रिभुवन = तीन भुवनों का समूह
- सतमंजिल = सात मंजिलों का समूह

3. तत्पुरुष समास

जिस समास में पूर्वपद गौण तथा उत्तरपद प्रधान हो, तत्पुरुष समास कहलाता है। दोनों पदों के बीच परसर्ग का लोप रहता है। परसर्ग लोप के आधार पर तत्पुरुष समास के छ: भेद हैं

(i) कर्म तत्पुरुष ('को' का लोप) जैसे-

- मतदाता = मत को देने वाला
- गिरहकट = गिरह को काटने वाला

(ii) करण तत्पुरुष जहाँ करण-कारक चिह्न का लोप हो; जैसे-

- जन्मजात = जन्म से उत्पन्न
- मुँहमाँगा = मुँह से माँगा
- गुणहीन = गुणों से हीन

(iii) सम्प्रदान तत्पुरुष जहाँ सम्प्रदान कारक चिह्न का लोप हो; जैसे-

- हथकड़ी = हाथ के लिए कड़ी
- सत्याग्रह = सत्य के लिए आग्रह

- युद्धभूमि = युद्ध के लिए भूमि

(iv) अपादान तत्पुरुष जहाँ अपादान कारक चिह्न का लोप हो; जैसे-

- धनहीन = धन से हीन
- भयभीत = भय से भीत
- जन्मान्ध = जन्म से अन्धा

(v) सम्बन्ध तत्पुरुष जहाँ सम्बन्ध कारक चिह्न का लोप हो; जैसे

- प्रेमसागर = प्रेम का सागर
- दिनचर्या = दिन की चर्या
- भारतरत्न = भारत का रत्न

(vi) अधिकरण तत्पुरुष जहाँ अधिकरण कारक चिह्न का लोप हो; जैसे-

- नीतिनिपुण = नीति में निपुण
- आत्मविश्वास = आत्मा पर विश्वास
- घुड़सवार = घोड़े पर सवार

4. कर्मधारय समास

जिस समास में पूर्वपद विशेषण और उत्तरपद विशेष्य हो, कर्मधारय समास कहलाता है। इसमें भी उत्तरपद प्रधान होता है; जैसे

- कालीमिर्च = काली है जो मिर्च
- नीलकमल = नीला है जो कमल
- पीताम्बर = पीत (पीला) है जो अम्बर
- चन्द्रमुखी = चन्द्र के समान मुख वाली
- सद्गुण = सद् हैं जो गुण

5. अव्ययीभाव समास

जिस समास में पूर्वपद अव्यय हो, अव्ययीभाव समास कहलाता है। यह वाक्य में क्रियाविशेषण का कार्य करता है; जैसे-

- यथास्थान = स्थान के अनुसार
- आजीवन = जीवन-भर
- प्रतिदिन = प्रत्येक दिन
- यथासमय = समय के अनुसार

6. बहुव्रीहि समास

जिस समास में दोनों पदों के माध्यम से एक विशेष (तीसरे) अर्थ का बोध होता है, बहुव्रीहि समास कहलाता है; जैसे

- महात्मा = महान् आत्मा है जिसकी अर्थात् ऊँची आत्मा वाला।
- नीलकण्ठ = नीला कण्ठ है जिनका अर्थात् शिवजी।
- लम्बोदर = लम्बा उदर है जिनका अर्थात् गणेशजी।
- गिरिधर = गिरि को धारण करने वाले अर्थात् श्रीकृष्ण।
- मक्खीचूस = बहुत कंजूस व्यक्ति

* चित्र वर्णन कीजिए।

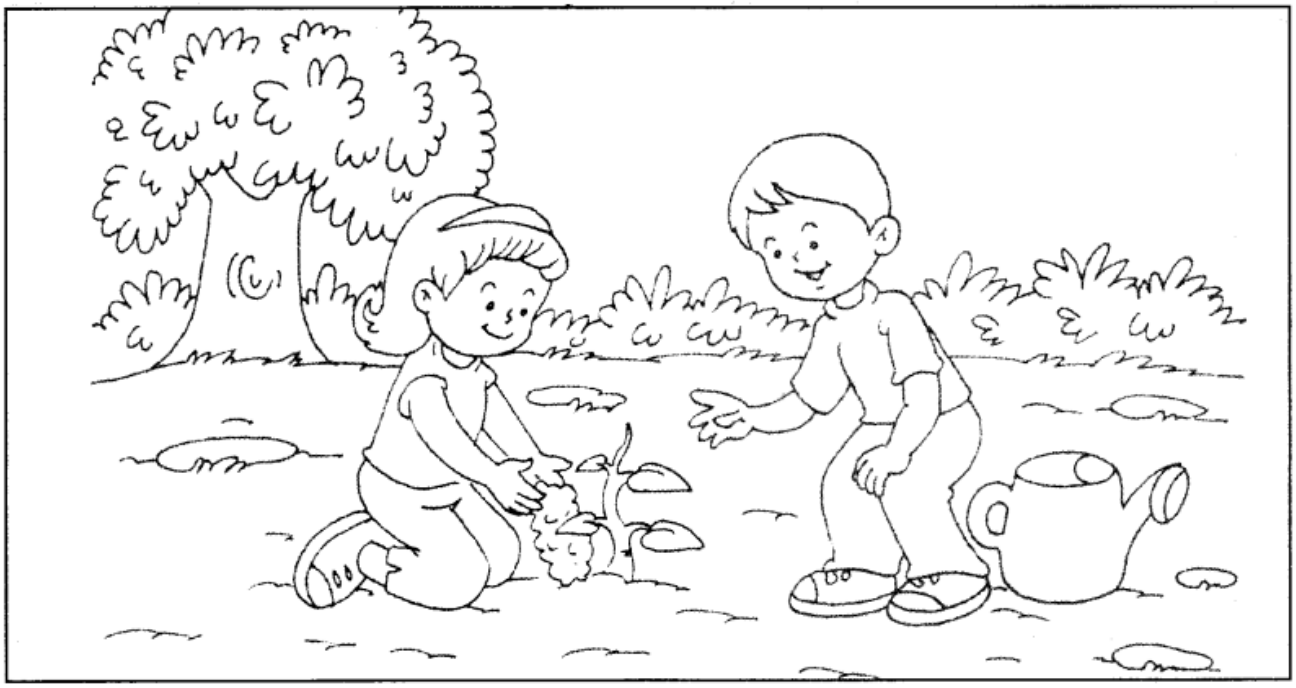

यह चित्र वृक्षारोपण का है। पर्यावरण के प्रति सजग कुछ बच्चों ने पार्क को हरा-भरा बनाने का जिम्मा उठाया है। इनके इस कार्य में प्रकृति भी उनका साथ दे रही है। बच्चे पौधों को लगाने के साथ उनकी रक्षा के लिए कटिबद्ध हैं। सरकार ने कई राज्यों में राष्ट्रीय उद्यान एवं अभ्यारण्य स्थापित किये हैं। वर संरक्षण के लिये बहुत अधिक प्रयास किये जा रहे हैं। विद्यालयों में भी इसको प्रोत्साहित करने के लिए बच्चों से वृक्ष लगवाये जाते हैं। सरकार ने वनों की रक्षा के लिये कड़े कदम उठाये हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद वन महोत्सव कार्यक्रम चलाया गया था। आज भी हरे भरे पेड़ों को काटना कानूनन अपराध है। 'हर जन्मदिन पर एक वृक्ष लगायें, भारत को हरा भरा बनायें' जैसे नारे दिये जा रहे हैं।

पाठ 7 अंतिम दौर-दो

1 पंजाब में क्या लागू हुआ?
उ मार्शल लाँ
2 किसके नेतृत्व में कांगेस सक्रिय बनी?
उ गांधी जी के
3 गांधी जी मुलतः कैसे व्यक्ति थे?
उ धर्मप्राण
4 मिस्टर जिन्ना की माँग क्या थी?
उ भारत के दो राष्ट्र हो- हिन्दू और मुसलमान
5 कग्रिस का विभाजन किन दो दलों में हुआ?
उ- कग्रिस का विभाजन 1) नरम दल और 2) गरम दल में हुआ।
6 गाँधीजी की शिक्षा का सार क्या था?
उ- गाँधीजी की शिक्षा का सार- निर्भयता और सत्य इनसे जुड़ा हुआ कर्म।
7 कांग्रेस संगठन का लक्ष्य और आधार क्या था?
उ- कांग्रेस संगठन का लक्ष्य और आधार सक्रियता था।
8 मुस्लिम लीग के कर्णधार कौन थे?
उ- मुस्लिम लीग के कर्णधार मोहम्मद अली जिन्ना थे।
9 अंग्रेजो ने " मार्शल ली " कहाँ लागू किया?
उ- अंग्रेजो ने "मार्शल ली " पंजाब में लागू किया।

व्याकरण

संधि

संधि की परिभाषा

दो वर्णों (स्वर या व्यंजन) के मेल से होने वाले विकार को संधि कहते हैं।

दूसरे अर्थ में- संधि का सामान्य अर्थ है मेल। इसमें दो अक्षर मिलने से तीसरे शब्द की रचना होती है, इसी को संधि कहते हैं।

सरल शब्दों में- दो शब्दों या शब्दांशों के मिलने से नया शब्द बनने पर उनके निकटवर्ती वर्णों में होने वाले परिवर्तन या विकार को संधि कहते हैं।

संधि का शाब्दिक अर्थ है- मेल या समझौता। जब दो वर्णों का मिलन अत्यन्त निकटता के कारण होता है तब उनमें कोई-न-कोई परिवर्तन होता है और वही परिवर्तन संधि के नाम से जाना जाता है।

संधि विच्छेद- उन पदों को मूल रूप में पृथक कर देना संधि विच्छेद है।
जैसे- हिम + आलय= हिमालय (यह संधि है), अत्यधिक= अति + अधिक (यह संधि विच्छेद है)

- यथा + उचित= यथोचित

- यशः + इच्छा= यशइच्छ
- अखि + ईश्वर= अखिलेश्वर
- आत्मा + उत्सर्ग= आत्मोत्सर्ग
- महा + ऋषि= महर्षि
- लोक + उक्ति= लोकोक्ति

संधि निरथर्क अक्षरों मिलकर सार्थक शब्द बनती है। संधि में प्रायः शब्द का रूप छोटा हो जाता है। संधि संस्कृत का शब्द है।

संधि के भेद

(1)स्वर संधि (vowel sandhi)
(2)व्यंजन संधि (Combination of Consonants)
(3)विसर्ग संधि (Combination Of Visarga)

(1)स्वर संधि (vowel sandhi) :- दो स्वरों से उत्पत्र विकार अथवा रूप-परिवर्तन को स्वर संधि कहते है।

दूसरे शब्दों में- ''स्वर वर्ण के साथ स्वर वर्ण के मेल से जो विकार उत्पत्र होता है, उसे 'स्वर संधि' कहते हैं।''

जैसे- विद्या + अर्थी = विद्यार्थी, सूर्य + उदय = सूर्योदय, मुनि + इंद्र = मुनीन्द्र, कवि + ईश्वर = कवीश्वर, महा + ईश = महेश

इनके पाँच भेद होते है -

2)व्यंजन संधि (Combination of Consonants) :- व्यंजन से स्वर अथवा व्यंजन के मेल से उत्पत्र विकार को व्यंजन संधि कहते है।
दूसरे शब्दों में- एक व्यंजन के दूसरे व्यंजन या स्वर से मेल को व्यंजन-संधि कहते हैं।

कुछ नियम इस प्रकार हैं-

(1) यदि 'म्' के बाद कोई व्यंजन वर्ण आये तो 'म्' का अनुस्वार हो जाता है या वह बादवाले वर्ग के पंचम वर्ण में भी बदल सकता है।
जैसे- अहम् + कार =अहंकार
पम् + चम =पंचम
सम् + गम =संगम

(2) यदि 'त्-द्' के बाद 'ल' रहे तो 'त्-द्' 'ल्' में बदल जाते है और 'न्' के बाद 'ल' रहे तो 'न्' का अनुनासिक के बाद 'ल्' हो जाता है।
जैसे- उत् + लास =उल्लास
महान् + लाभ =महांल्लाभ

(3) किसी वर्ग के पहले वर्ण ('क्', 'च्', 'ट्', 'त्', 'प') का मेल किसी स्वर या वर्ग के तीसरे, चौथे वर्ण या र ल व में से किसी वर्ण से हो तो वर्ण का पहला वर्ण स्वयं ही तीसरे वर्ण में परिवर्तित हो जाता है। यथा-

दिक् + गज =दिग्गज (वर्ग के तीसरे वर्ण से संधि)
षट् + आनन =षडानन (किसी स्वर से संधि)
षट् + रिपु =षड्रिपु (र से संधि)

अन्य उदाहरण
जगत् + ईश =जगतदीश
तत् + अनुसार =तदनुसार
वाक् + दान =वाग्दान
दिक् + दर्शन =दिग्दर्शन
वाक् + जाल =वगजाल
अप् + इन्धन =अबिन्धन
तत् + रूप =तद्रूप

<u>3)विसर्ग संधि (Combination Of Visarga)</u> :- विसर्ग के साथ स्वर या व्यंजन मेल से जो विकार होता है, उसे 'विसर्ग संधि' कहते है।
दूसरे शब्दों में- स्वर और व्यंजन के मेल से विसर्ग में जो विसर्ग होता है, उसे 'विसर्ग संधि' कहते है।
इसे हम ऐसे भी कह सकते हैं- विसर्ग (:) के साथ जब किसी स्वर अथवा व्यंजन का मेल होता है, तो उसे विसर्ग-संधि कहते हैं।

कुछ नियम इस प्रकार हैं-

(1) यदि विसर्ग के पहले 'अ' आये और उसके बाद वर्ग का तृतीय, चतुर्थ या पंचम वर्ण आये या य, र, ल, व, ह रहे तो विसर्ग का 'उ' हो जाता है और यह 'उ' पूर्ववर्ती 'अ' से मिलकर गुणसन्धि द्वारा 'ओ' हो जाता है।
जैसे-

मनः + रथ =मनोरथ
सरः + ज =सरोज
मनः + भाव =मनोभाव
पयः + द =पयोद
मनः + विकार = मनोविकार
पयः + धर =पयोधर
मनः + हर =मनोहर
वयः + वृद्ध =वयोवृद्ध
यशः + धरा =यशोधरा
सरः + वर =सरोवर
तेजः + मय =तेजोमय
यशः + दा =यशोदा
पुरः + हित =पुरोहित
मनः + योग =मनोयोग

लेखन-विभाग

* दिनचर्या लेखन

परीक्षा में प्रथम अंक लाने पर जो ख़ुशी हुआ।

हैदराबाद
07 जनवरी, 20XX, बुधवार
रात्रि 10 : 45 बजे
आज मैं बहुत खुश हूँ, क्योंकि आज मेरी इच्छा पूरी हो गई है। आज कक्षा में अध्यापिका ने सबके सामने परीक्षा परिणाम घोषित किया। जब उन्होंने सबसे अधिक अंक प्राप्त करके प्रथम आने वाली छात्रा का नाम लिया, तब मुझे अपने कानों पर विश्वास ही नहीं हुआ, क्योंकि वह छात्रा कोई और नहीं मैं ही थी। सभी साथियों ने मेरी प्रशंसा की। घर आने पर मैंने माँ-पिता जी व दादा-दादी को रिपोर्ट कार्ड दिखाया, तो वे बहुत प्रसन्न हुए और मुझे न जाने कितने आशीर्वाद दिए।

अनुष्का

पाठ 18 टोपी

लेखक- संजय

*** पाठ सार-**

यह कहानी एक गौरैया के जोड़े की है। उन दोनों में बहुत प्रेम था। एक-दूसरे के बगैर वे कोई भी काम नहीं करते थे। एक बार मादा गौरैया ने किसी मनुष्य को कपड़े पहने देखा तो उसकी प्रशंसा की परंतु नर गौरैया ने कहा कि वस्त्रों से मनुष्य सुन्दर नहीं लगता, वह तो मनुष्य के वास्तविक सौंदर्य को ढाक लेता है। परन्तु मादा गौरैया को टोपी पहनने का मन करता है, नर गौरैया कहता है कि हमें वस्त्रों की कोई आवश्यकता नहीं हम तो ऐसे ही ठीक हैं। मगर मादा गौरैया अपनी जिद की पक्की थी, उसने निश्चय कर लिया था कि वह टोपी बनवाकर ही रहेगी। एक दिन उसे रूई का टुकड़ा मिला, जिसे पहले वह धुनिया के पास ले जा कर धुनवाती है, फिर सूत कतवाने के लिए कोरी के पास ले जाती है तथा दोनों को बनवाई आधा-आधा हिस्सा मजदूरी दे देती है। गौरैया धागा बनवाने के बाद बुनकर के पास जाती है और बुनकर को कपड़े का आधा हिस्सा मजदूरी देकर तथा अपना कपड़ा लेकर दर्जी के पास जाती है तथा उसे भी उसकी मजदूरी देकर, उससे दो टोपियाँ बनवा लेती है। दर्जी ने खुश हो कर उसकी टोपी में पाँच ऊन के फूल भी लगा दिए। चिड़िया की टोपी बहुत सुन्दर बनी थी। चिड़िया के मन में राजा से मिलने की इच्छा उत्पन्न हुई, तो वह राजा के महल की ओर उड़ चली। चिड़िया राजा के महल पहुँची, तो राजा छत पर मालिश करवा रहा था। चिड़िया ने राजा का मजाक उड़ाना शुरू कर दिया। राजा को क्रोध आ गया। उसने अपने सैनिकों को उस चिड़िया को मारने के लिये कहा पर सैनिकों ने उसे मारा नहीं राजा के कहने पर उसकी टोपी छीन ली। राजा उसकी सुन्दर टोपी देखकर हैरान था कि उस चिड़िया के पास इतनी सुन्दर टोपी कहाँ से आई। राजा हैरान था की इतनी सुन्दर टोपी किसने बनाई। उसने अपने सेवकों द्वारा उस दर्ज़ी को बुलवाया। दर्जी ने टोपी सुन्दर बनने का कारण अच्छा कपड़ा बताया। इस प्रकार क्रमशः बुनकर, कोरी व धुनिया को बुलावा भेजा। उन्होंने बताया की उन्होंने बहुत अच्छा काम इसलिए किया है क्योंकि उन्हें मजदूरी बहुत अच्छी मिली थी। चिड़िया ने राजा को कहा कि उसने सारा कार्य पूरी कीमत चुकाकर करवाया है। वह राजा पर आरोप लगाती है कि राजा कंगाल है, तभी प्रजा को बहुत सताता है, उन पर कर लगाता है और तभी उसने उसकी टोपी भी छीन ली है क्योंकि वह खुद इतनी अच्छी टोपी नहीं बनवा सकता। राजा को अपनी पोल खुलने का डर हो जाता है इसलिए वह चिड़िया की टोपी वापस कर देता है। चिड़िया राजा को डरपोक-डरपोक कहती हुई निकल जाती है।

***शब्दार्थ**

1)एक दूजे- एक दूसरे
2)परम संगी- मुख्य साथी
3)भिनसार- प्रातः काल
4)दाना चुगने और झुटपुटा- वह समय जब कुछ-कुछ अँधेरा और कुछ-कुछ उजाला हो
5)खोंते - घोंसले
6)थकान- कमज़ोरी
7)हिस्सेदारी- भागीदारी
8)फबता- सुन्दर
9)तपाक- जल्दी
10)बदसूरत- बुरा दिखना
11)लटजीरा- एक पौधा
12)कुदरती- स्वाभाविक
13) सुघड़- सुन्दर

14)काया- तन 15)कटाव- आकार
16)रोंवें-रोंवें की रंगत- रंग

* साहित्य

1)गवरइया और गवरा के बीच किस बात पर बहस हुई और गवरइया को अपनी इच्छा पूरी करने का अवसर कैसे मिला?

उत्तर- गवरइया और गवरा के बीच मनुष्य द्वारा पहने गए कपड़ों को लेकर बहस हुई। गवरइया को अपनी इच्छा पूरी करने का अवसर, एक रुई का फाहा मिलने से मिला। जिससे उसने टोपी बनवाई और अपनी इच्छा पूरी की।

2)टोपी बनवाने के लिए गवरइया किस-किस के पास गई? टोपी बनने तक के एक-एक कार्य को लिखें।

उत्तर- टोपी बनवाने के लिये गवरइया पहले धुनिया के पास रुई धुनवाने के लिए गई, फिर वह कोरी के पास तकवाने के लिये गई, इसके बाद बुनकर के पास कपड़ा बुनवाने के लिये और अंत में दर्जी के पास टोपी सिलवाने के लिये गई। तब उसकी टोपी तैयार हुई।

3) गवरइया की टोपी पर दर्जी ने पाँच फुँदने क्यों जड़ दिए?

उत्तर- गवरइया की टोपी पर दर्जी ने पाँच फुँदने इसलिये जड़ दिए क्योंकि उसने दर्जी को मजदूरी के रूप में आधा कपड़ा दे दिया था। खुश होकर उसने टोपी को और सुन्दर बना दिया था।

4) गवरइया के स्वभाव से यह प्रमाणित होता है कि कार्य की सफलता के लिए उत्साह आवश्यक है। सफलता के लिए उत्साह की आवश्यकता क्यों पड़ती है, तर्क सहित लिखिए।

- सफलता के लिए उत्साह आवश्यक है। कहा भी गया है कि मन के हारे हार है मन के जीते जीत। उत्साह से ही हमारे मन में किसी भी कार्य के प्रति जागरूकता उत्पन्न होती है। यदि हम किसी भी कार्य को बेमन से करेंगे तो निश्चय ही हमें उस कार्य में पूर्णतया सफलता नहीं मिलेगी।

5) यदि राजा के राज्य के सभी कारीगर अपने-अपने श्रम का उचित मूल्य प्राप्त कर रहे होते तब गवरइया के साथ उन कारीगरों का व्यवहार कैसा होता?

- यदि राजा के राज्य के सभी कारीगर अपने-अपने श्रम का उचित मूल्य प्राप्त कर रहे होते तब गवरइया के साथ उन कारीगरों का व्यवहार सामान्य होता और सर्वप्रथम वे राजा का काम करते क्योंकि उनका काम ज्यादा था।

व्याकरण

हिंदी में विराम चिह्न बहुत महत्वपूर्ण है विराम चिह्न का उपयोग लिखनेके समय उपयोग किया जाता है यह वाक्य के प्रकार और उसके स्थान के बारे मे भी जानकारी देता हैं। विराम चिह्न वाक्य के अनुसार बदलते है।

दुसरे शब्दो मे यह कह सकते है कि भाषा में स्थान -विशेष पर रुकने अथवा उतार -चढ़ाव आदि दिखाने के लिए जिन चिन्हों का प्रयोग किया जाता है उन्हें ही ' विराम चिन्ह ' कहते है-

1) पूर्ण विराम (।) (Full Stop)

2) अल्प विराम (,) (Comma)

3) अर्ध विराम (;) (Semicolon)

4) प्रशनवाचक चिन्ह (?) (Question Mark)

5) विस्मयादिवाचक चिन्ह (!) (Exclamation Mark)

6) निर्देशक (—) (Dash)

7) योजक (-) (Hyphen)

8) उद्धरण चिन्ह (" ") (Quotation Mark)

9) विवरण चिन्ह (:-) (Sign of Following)

लेखन- विभाग
संवाद लेखन

* पिता और पुत्र में वार्तालाप

पिता- बेटे अतुल, कैसा रहा तुम्हारा परीक्षाफल ?

पुत्र- बहुत अच्छा नहीं रहा, पिताजी।

पिता- क्यों ? बताओ तो कितने अंक आए हैं ?

पुत्र- हिन्दी में सत्तर, अंग्रेजी में बासठ, कामर्स में अस्सी, अर्थशास्त्र में बहत्तर.....

पिता- अंग्रेजी में इस बार इतने कम अंक क्यों हैं ? कोई प्रश्न छूट गया था ?

पुत्र- पूरा तो नहीं छूटा ..... सबसे अंत में 'ऐस्से' लिखा था, वह अधूरा रह गया।

पिता- तभी तो..... । अलग-अलग प्रश्नों के समय निर्धारित कर लिया करो, तो यह नौबत नहीं आएगी। खैर, गणित तो रह ही गया।

पुत्र- गणित का पर्चा अच्छा नहीं हुआ था। उसमें केवल पचास अंक आए हैं।

पिता- यह तो बहुत खराब बात है। गणित से ही उच्च श्रेणी लाने में सहायता मिलती है।

पुत्र- पता नहीं क्या हुआ, पिताजी। एक प्रश्न तो मुझे आता ही नहीं था। शायद पाठ्यक्रम से बाहर का था।

पिता- एक प्रश्न न करने से इतने कम अंक तो नहीं आने चाहिए।

पुत्र- एक और प्रश्न बहुत कठिन था। उसमें शुरू से ही ऐसी गड़बड़ी हुई कि सारा प्रश्न गलत हो गया।

पिता- अन्य छात्रों की क्या स्थिति है ?

पुत्र- बहुत अच्छे अंक तो किसी के भी नहीं आए पर मुझसे कई छात्र आगे हैं।

पिता- सब अभ्यास की बात है बेटे ! सुना नहीं 'करत करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान।' तुम तो स्वयं समझदार हो। अब वार्षिक परीक्षाएँ निकट है। दूरदर्शन और खेल का समय कुछ कम करके उसे पढ़ाई में लगाओ।

पुत्र- जी पिताजी ! मैं कोशिश करूँगा कि अगली बार गणित में पूरे अंक लाऊँ।

पिता- मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है।

* चित्र वर्णन कीजिए।

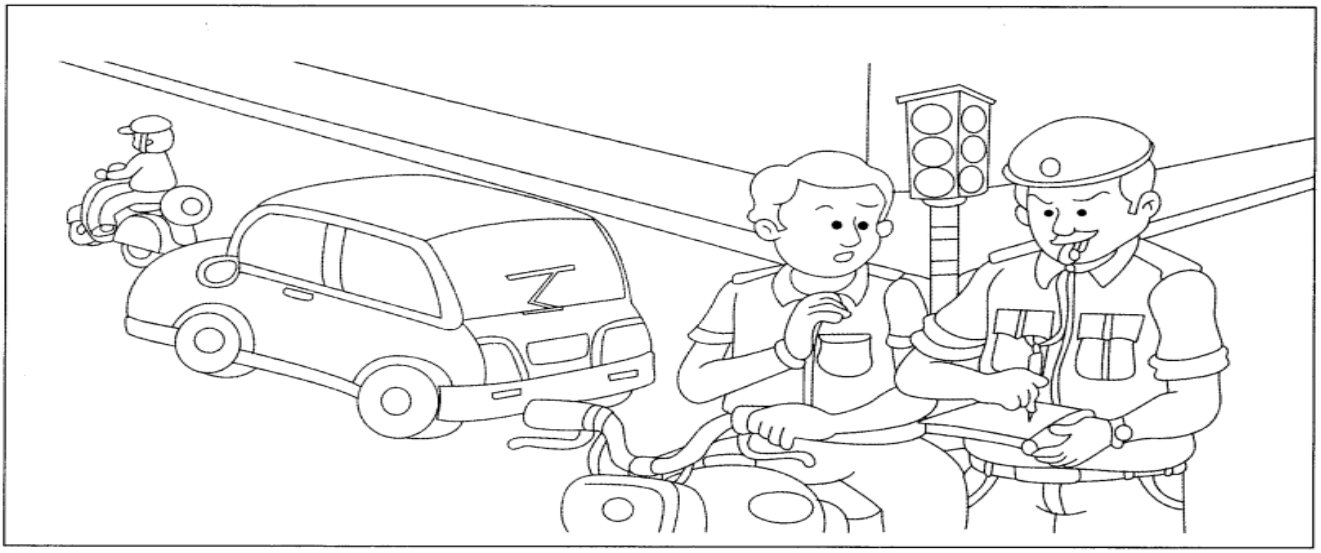

इस चित्र में कोई युवक बिना हेलमेट लगाए मोटरसाइकिल चला रहा है। उसने लालबत्ती की परवाह नहीं की और बिना रुके चौराहा पार कर गया। सड़क सुरक्षा कानून का इस तरह उल्लंघन करने के कारण ट्रैफिक पुलिस वाला उसका चालान काट रहा है।

* गतिविधि- चिड़िया का चित्र बनाओ।

भारत की खोज
पाठ 8 तनाव

1 भारत में तनाव कब बढा?
उ- 1942 में
2 भारत छोड़ो प्रस्ताव कब और कहाँ हुआ?
उ मुंबई में 7,8 अगस्त 1942 को।
3 भारत के शहरों पर किस तरह के हमलों की संभावना थी?
उ- भारत के शहरों पर हवाई हमलों की संभावना बढ़ गई थी।
4 " भारत छोड़ो प्रस्ताव "पर किसने विचार प्रस्तुत किया था?
उ- अखिल भारतीय कांग्रेस ने " भारत छोड़ो प्रस्ताव "पर विचार प्रस्तुत किया।
5 किसके नेतृत्व में जन-आंदोलन शुरु करने की बात कही गई?
उ- गांधीजी के नेतृत्व में जन-आंदोलन शुरु करने की बात कही गई।
6 कांग्रेस कमेटी ने ब्रिटेन और संयुक्त राष्ट्र से क्या अपील की?
उ- काग्रेस कमेटी ने भारत व संसार के सभी गुलाम देशों की आज़ादी की- अपील की।
7 गांधीजी और कांग्रेस साभपति मौलाना अबुल कलाम ने अपने भाषण में क्या स्पष्ट किया?
उ- गांधीजी और कांग्रेस सभापति मौलाना अबुल कलाम ने अपने भाषण में अगले कदम की घोषणा कर दी।

व्याकरण

क्रिया-विशेषण

- जो शब्द क्रिया की विशेषता प्रकट करते हैं, वे क्रिया विशेषण कहलाते हैं। क्रिया विशेषण के निम्नलिखित चार भेद होते हैं।

१-काल वाचक क्रिया विशेषण
२-स्थान वाचक क्रिया विशेषण
३-परिमाणवाचक क्रियाविशेषण
४-रीति वाचक क्रिया विशेषण

1) काल वाचक क्रिया विशेषण की परिभाषा-

क्रिया विशेषण शब्द से कार्य के होने का समय ज्ञात हो तो वह काल वाचक क्रिया विशेषण कहलाता है। इसमें बहुदा ये शब्द प्रयोग में आते हैं- यदा, कदा,जब, तब, हमेशा, तभी, तत्काल, निरंतर, शीघ्र, पूर्व, बाद, पीछे, घड़ी-घड़ी, अब, तत्पश्चात, कल, कई बार, अभी, फिर कभी आदि।

काल वाचक क्रिया विशेषण

१-मैं अभी आ रहा हूं।
२-फिर कभी चलेंगे।
३-पानी निरंतर बह रहा है।

2)स्थान वाचक क्रिया विशेषण की परिभाषा-

जिस क्रिया विशेषण शब्द द्वारा क्रिया के होने के स्थान का बोध हो वह स्थान वाचक क्रिया विशेषण कहलाता है। इसमें ज्यादातर यह शब्द प्रयोग में आते हैं भीतर, बाहर, अंदर, यहां, वहां, किधर, इधर-उधर, कहां, जहां, दूर, अन्यत्र, इस ओर, उस ओर, दाएं, बाएं, ऊपर, नीचे आदि।

स्थान वाचक क्रिया विशेषण

१-भीतर जाकर बैठिए
२-यहां से चले जाइए।
३-किधर जा रहे हो

3)परिमाणवाचक क्रिया विशेषण की परिभाषा-

जो शब्द क्रिया का परिमाण बतलाते हैं वह परिमाणवाचक क्रिया विशेषण कहलाते हैं। इसमें बहुदा थोड़ा-थोड़ा, अत्यंत, अधिक, अल्प, बहुत, कुछ, पर्याप्त, तक, कम, न्यून, बूंद बूंद, स्वल्प, केवल आदि शब्द प्रयोग में आते हैं।

परिमाणवाचक क्रियाविशेषण

१-थोड़ा थोड़ा अभ्यास कीजिए
२-वह अधिक बोलता है

4)रीति वाचक क्रिया विशेषण की परिभाषा-

जिन शब्दों के द्वारा क्रिया के संपन्न होने की रीति का बोध होता है वे रीती वाचक क्रिया विशेषण कहलाते हैं।
इनमें झटपट, आप ही आप, ध्यान पूर्वक ,धड़ाधड़, यथा, ठीक, सचमुच, अवश्य, वास्तव में, निस्संदेह, बेशक, शायद, संभव है, कदाचित, बहुत करके, ठीक, सच, जी, जरूर, आते हो, इसलिए, क्योंकि, नहीं, कभी नहीं, कदापि नहीं आदि शब्द आते हैं।

रीति वाचक क्रिया विशेषण

१-दिन जल्दी जल्दी ढलता है।
२-संभव है कि वह आए
३-धीरे-धीरे चलिए

लेखन- विभाग

कहानी- पुजारी की कहानी

एक शहर में प्राचीनकाल का एक बहुत पुराना मन्दिर था, मन्दिर के चारो तरफ एक चार-दीवारी लगी हुई थी और के अंदर एक खूब सुंदर बगीचा लगाया हुआ था जिसमें बिभिन्न प्रकार के सुंदर-सुंदर पेड़-पौंधे लगाये हुए थे जिसकी वजह से वो मन्दिर और भी सुंदर दिखता था।मन्दिर में भगवान का पूजा-पाठ करने के लिये एक पुजारी जी रहते थे, और वही बगीचे का भी देखभाल रखते थे क्यूँकि ये करने से उन्हें बहुत आनन्द मिलता था।उस मन्दिर के बगल में एक और छोटा सा मन्दिर था जिसमें एक बहुत बुजुर्ग पुजारी रहते थे और वो उस छोटे मँदिर के भगवान की मूर्ति का पूजा पाठ करते थे।दोनों मन्दिर के बीच में एक दीवार थी जो उन दोनों मन्दिर को अलग करती थी।एक दिन उस बडी मन्दिर में दर्शन करने के लिये कोई बड़ा अदमी आने वाला था और उसको ख़ुश करने के लिये बड़े मन्दिर के पुजारी जी मन्दिर और बगीचे की साफ-सफाई करने में लग गये, 2 दिन कड़ी मेहनत करके उन्होंने मन्दिर और बगीचे की ऐसी सफाई कर दी कि बगीचे में एक सूखा पत्ता भी नहीं पड़ा था।

उस छोटे मन्दिर का बुजुर्ग पुजारी दीवार के उस पार से ये सब बड़े ध्यान से देख रहा था।मन्दिर और बगीचे कि साफ-सफाई करने के बाद बड़े मन्दिर के पुजारी जी अपनी वाह-वाही सुनने के लिये उस छोटे मन्दिर के पुजारी के पास गये और बोले कि “अभी बगीचा और मन्दिर कितना सुंदर और मनमोहित लग रहा है।”तो वो बुजुर्ग पुजारी जी ने कहा कि आपने साफ-सफाई तो बड़े अच्छे से की लेकिन उसमें एक चीज कि कमी है जो बगीचे की सुन्दरता को अधूरा बना रहा है।बड़े मन्दिर के पुजारी ने पूछा कि वो क्या है?

बुजुर्ग पुजारी ने कहा कि आप मुझे दीवार के उस पार खीचो फिर मैं आप को बताता हूँ कि क्या कमी रह गयी है, उन्होंने बुजुर्ग पुजारी को दीवार के उस पार खींच लिया।दीवार के उस पार आने के बाद वो बुजुर्ग पुजारी सीधा बगीचे की तरफ चला गया और वहा जाकर सारे पेड़ों को पकड़कर धीरे-धीरे हिला दिया जिससे बगीचे में थोड़े सूखे और हरे पत्ते गिर गये। बुजुर्ग पुजारी ने कहा कि अब बगीचा बहुत सुंदर लग रहा है।

सीख: आप जैसे भी हो बहुत अच्छे हो |

भारत की खोज
पाठ 9 दो पृष्ठभूमियाँ भारतीय और अंग्रेजी

1 भारत की बीमारी क्या थी?
उ अकाल
2 भारत किससे बीमार था?
उ तन और मन दोनों से।
3 ब्रिटिश शासन के अंतिम दौर में भारत में कहाँ-कहाँ अकाल का प्रभाव रहा?
उ-ब्रिटिश शासन के अंतिम दौर में बंगाल और बिहार में अकाल का प्रभाव रहा।
4 तन और मन दोनों से कौन बीमार था?
उ- तन और मन दोनों से भारत बीमार था।
5 अकाल ने भारत की कैसी तस्वीर को उजागर कर दिया?
उ- अकाल ने भारत की बदहालो और बदसूरती की तस्वीर को उजागर कर दिया।
6 अकसर भारत को कैसा देश कहा जाता है?
उ- अकसर भारत को अंतर्विरोधों का देश कहा जाता है।
7 नेताओं की गिरफ्तारियों का क्या परिणाम हुआ?
उ- नेताओं की गिरफ्तारियों से जनता का क्रोध ओर बढ़ गया।

व्याकरण

* **वाक्य-** दो या दो से अधिक पदों के सार्थक समूह को, जिसका पूरा पूरा अर्थ निकलता है, वाक्य कहते हैं।

वाक्य के प्रकार (भेद)

अर्थ के आधार पर वाक्य के प्रकार

1) विधानवाचक वाक्य (Affirmative sentence)
जिस वाक्य से क्रिया **करने या होने का बोध** हो , उसे विधानवाचक वाक्य कहते है।
जैसे :- रमा खेल रही है।

2) निषेधवाचक वाक्य (Negative sentence)
जिस वाक्य में क्रिया **न करने या न होने का बोध** हो , उसे निषेधवाचक वाक्य कहते है।
जैसे :- बाहर जाना **मना** है।

3) प्रश्नवाचक वाक्य (Interrogative sentence)

जिस वाक्य में **<u>प्रश्न का बोध</u>** हो , उसे प्रश्नवाचक वाक्य कहते है।

जैसे :- तुम **क्या** कर रहे हो ?

4) संदेहवाचक वाक्य (Skeptical sentence)

जिस वाक्य में **<u>संदेह या संभावना का बोध</u>** हो , उसे संदेहवाचक वाक्य कहते है।

जैसे :- शायद आज बारिश होगी।

5) संकेतवाचक वाक्य (Indicative sentence)

जिस वाक्य में **<u>एक क्रिया दूसरी क्रिया पर निर्भर होने का संकेत</u>** हो , उसे संकेतवाचक वाक्य कहते है।

जैसे :- यदि बारिश होती **तो** पानी की कमी न होती।

6) इच्छावाचक वाक्य (Optative sentence)

जिस वाक्य में **<u>इच्छा , शुभकामना , आशीर्वाद , आशा आदि के भाव</u>** प्रकट हों , उसे इच्छावाचक वाक्य कहते है।

जैसे :- मुझे आज बाहर जाने का मन हो रहा है।
आप अच्छे अंको से पास हो।
सदा कल्याण हो।
अच्छे के लिए आशा !

7) आज्ञावाचक वाक्य (Imperative sentence)

जिस वाक्य में **<u>आज्ञा , उपदेश , आदेश , अनुमति या प्रार्थना आदि के भाव</u>** प्रकट हो , उसे आज्ञावाचक वाक्य कहते है।

जैसे :- तुम बाहर जाओ। (आज्ञा-order का भाव)
निरंतर कोशिश करने वाले कभी हारते नहीं।
तुम खेलने के लिए बाहर जा सकते हो।
हे प्रभु ! मेरा विश्वास कमज़ोर न हो।

8) विस्मयादिवाचक वाक्य (Exclamatory sentence)

जिस वाक्य में **<u>विस्मय , हर्ष , क्रोध , घृणा आदि के भाव</u>** प्रकट हों , उसे विस्मयादिबोधक वाक्य कहते है।

जैसे :- अरे ! तुम कितनी सुंदर लग रही हो।
धन्य – धन्य ! तुम पहले नंबर से पास हो गए।
बस करो ! तुम्हें कुछ समज में नहीं आता ?

रचना के आधार पर वाक्य प्रकार

1) सरल वाक्य (simple sentence)

जिस वाक्य में **एक उद्देश्य और एक विधेय** होता है , उसे सरल वाक्य कहते है।

जैसे :- सोहन खेलता है। ('सोहन' उद्देश्य है और 'खेलता है ' विधेय है।)

2) संयुक्त वाक्य (compound sentence)

जिस में **दो या अधिक स्वतंत्र उपवाक्य** होते है और वे 'या' , 'किंतु' , 'और' जैसे समुच्चबोधकों(conjunctions) से जुड़े होते हैं , उसे संयुक्त वाक्य कहते है।

जैसे :- शिला बहादुर है और चतुर भी है। ('शिला बहादुर है।' , 'चतुर भी है।' दोनों स्वतंत्र उपवाक्य है। 'और ' समुच्चयबोधक अव्यय है।)

3) मिश्र वाक्य (complex sentence)

जिस वाक्य में **उपवाक्य मुख्य उपवाक्य पर आश्रित** होता है और वे 'कि ' , ' तथापि ' , ' इसलिए ' जैसे समुच्चयबोधकों(conjunctions) से जुड़े होते है , उसे मिश्र वाक्य कहते है।

जैसे :- मैंने देखा कि पर्दे के पीछे कोई छिपा था। ('मैंने देखा' मुख्य उपवाक्य है और 'पर्दे के पीछे कोई छिपा था।' आश्रित उपवाक्य है है। 'कि ' समुच्चयबोधक अव्यय है।)

लेखन-विभाग

* **निबंध- जीवन में खेल कूद का महत्व**

खेल हमारे जीवन का एक एहम हिस्सा है, यह हमारे शारीरिक एवम् मानसिक दोनो ही विकास का श्रोत है. यह हमारे शरीर के रक्त परिसंचरण मे सहायक है, वही दूसरी ओर हमारे दिमागी विकास मे लाभकारी है. खेल व्यायाम का सबसे अच्छा साधन माना जाता है. खेल ही हमारे शरीर को हस्ट-पुस्ट, गतिशील एवं स्फूर्ति प्रदान करने मे सहायक होते है| एक सफल इंसान के लिए चाहिए कि वह मानसिक तथा शारीरिक दोनो रूप से स्वस्थ रहे, मानसिक विकास की शुरुआत हमारे स्कूल के दिनो से होना प्रारंभ हो जाती है, किंतु शारीरिक विकास के लिए व्यायाम ज़रूरी है जो हमे खेलो के माध्यम से प्राप्त होता है.

खेल कई तरह के होते है जिन्हे मुख्यतः दो वर्गो मे बाँटा गया है इनडोर एवं आउटडोर. इनडोर खेल जैसे ताश, लुडो, केरम सांपसीडी आदि ये मनोरंजन के साथ साथ बोधिक विकास मे सहायक होते है, वही आउटडोर खेल जैसे क्रिकेट, फूटबॉल, हॉकी, बेटमिंटन, टेनिस, वॉलीबॉल आदि शरीर को स्वस्थ बनाए रखने मे लाभकारी है. इन दोनो वर्गो मे अंतर बस इतना है कि आउटडोर खेलो के लिए बड़े मैदान की आवश्यकता होती है, यह खेल हमारे शरीर के फिटनेस एवं तंदुरुस्त बनाए रखने मे सहायक है जबकि इनडोर खेलो मे ऐसे बड़े मैदान की ज़रूरत नही होती है, यह घर आँगन कही भी खेले जा सकते है. इन खेलो मे सभी पीढ़ी के लोग चाहे बालक, युवा और चाहे व्रध्य पीढ़ी ही क्यों ना हो, सभी अपनी रूचि रखते है. आउटडोर खेल हमारे शारीरिक विकास मे लाभकारी होते है, वही दूसरी ओर शरीर को स्वस्थ सुडोल तथा सक्रिय बनाए रखते है, जबकि इनडोर खेल हमारे दिमागी स्तर को तेज (चेस) करते है. साथ ही साथ मनोरंजन का उतम स्त्रोत माने जाते है|

आजकल की व्यस्त दिनचर्या मे खेल ही एक मात्र साधन है, जो मनोरंजन के साथ साथ हमारे विकास मे सहायक है. यह हमारे शरीर को स्वस्थ एवं तंदुरुस्त बनाए रखता है. इससे हमारे नेत्रो की ज्योति बढ़ती है, हड्डिया मजबूत एवं रक्त का संचार उचित रूप से होता है. खेलो से हमारे पाचन तंत्र पूर्ण रूप से कार्य करता

है. खेल एक व्यायाम है जिससे हमारे दिमागी स्तर का विकास होता है, ध्यान केंद्रित करने की शक्ति बढ़ती है. इस तरह के व्यायाम से शरीर के सारे अंग पूर्ण रूप से काम करते है, जिससे हमारा दिन अच्छा एवं ख़ुसनूमा होता है. खेलो से हमारा शरीर सुडोल एवं आकर्षक बनता है, जो आलस्य को दूर कर उर्जा प्रदान करता है. अत: हमे रोगो से मुक्त रखता है. हम यह भी कह सकते है कि मनुष्य के वयक्तित्व के विकास मे खेल अपनी एहम भूमिका अदा करता है, इससे ही मनुष्य आत्मनिर्भर तथा जीवन मे सफलता प्राप्त करता है|

किसी महान पुरुष ने कहा है कि एक स्वस्थ शरीर मे स्वस्थ मस्तिष्क का विकास होता है, स्वस्थ जीवन ही सफलता प्राप्त करने की कुंजी है, इस तरह खेल हमारे जीवन को सफल बनाने मे सहायक है|